बड़ा खास है बांस

सी. के. जॉन और रजनी एस. नाडगौंडा

पेड़-पौधों में बांस एक ऐसा समूह है जिसने अत्यन्त प्राचीन समय से मनुष्य का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। इनके व्यवहार की एक खासियत यह है कि इनके जीवन में सिर्फ एक बार ही फूल आते हैं - उम्र चाहे तीन वर्ष हो, 120 वर्ष या फिर इससे भी अधिक। पुष्पन यानी फूल आने के बाद बांस की मौत हो जाती है। यह विलक्षण प्राकृतिक घटना आज भी एक रहस्य बनी हुई है। बांसों की विभिन्न प्रजातियां, उनकी प्रचुरता, उनका तेज़ी से बढ़ना, उनके अनगिनत उपयोग के साथ-साथ उनका विलक्षण पुष्पन व्यवहार भी काफी रोचक है जो जायंट पांडा के अस्तित्व के साथ जुड़ा है।

बांस का जीवविज्ञान

हालांकि इस पर विश्वास करना आसान नहीं है, लेकिन यह सच है कि बांस एक प्रकार की घास है जो *पोएसी* कुल की सदस्य है। इस कुल में गेहूं और चावल जैसी चिरपरिचित घास समेत विभिन्न प्रकार की घास आती हैं। लेकिन बांस अपनी दो खासियतों के चलते अन्य घास से अलग है; एक तो उनका सदाबहार जीवन और दूसरे उनका पेड़ों (वृक्षों) जैसा वृद्धि का तरीका। इसीलिए इसे 'दैत्याकार घास' या अंग्रेज़ी में 'ट्री ग्रास' जैसे विशेषणों से नवाज़ा गया है। बांसों की 1200 से 1500 प्रजातियां हैं जिन्हें 75 वंशों में बांटा गया है। आम तौर पर बांस उष्ण और उपोष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में ही पाए जाते हैं लेकिन शीतोष्ण क्षेत्रों में भी इन्हें देखा जा सकता है।

बांस के पौधे में एक भूमिगत तना होता है जिसे राइज़ोम तंत्र के नाम से जाना जाता है। इसके ज़मीन के ऊपर के हिस्से में सीधा तना, शाखाएं और पत्तियां पाई जाती हैं। आम तौर पर दो तरह के राइज़ोम तंत्र पाए जाते हैं एक झुण्ड बनाने वाले और दूसरे ज़मीन के साथ रेंगने वाले यानी रनर। इनमें से पहले प्रकार के तंत्र को सिम्पोडियल तथा दूसरे को मोनोपोडियल कहा जाता है। ज़्यादातर कटिबंधीय बांस सिम्पोडियल प्रकार के होते हैं यानी झुण्ड रूपी राइज़ोम बनाने वाले जबकि शीतोष्ण बांस भूमि पर रेंगने वाले राइज़ोम तंत्र लिए होते हैं।

इसके कारण कटिबंधीय बांसों के झुरमुट सघन एवं विरल, दोनों तरह के झुण्डों में होते हैं। जबकि इसके उलट शीतोष्ण बांसों में राइज़ोम व्यवस्था काफी लम्बे-चौड़े क्षेत्र में फैली रहती है और इसके तने एक-दूसरे से कुछ दूरी पर निकले होते हैं। इन्हीं वजहों से इस प्रकार के बांस झुरमुट में नहीं पाए जाते हैं।

माना जाता है कि कटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाने वाले बांसों के झुण्ड में उगने की प्रवृत्ति एक किस्म के अनुकूलन का परिणाम है। इससे उनकी छाया का क्षेत्र बढ़ जाता है और हर झुरमुट के नीचे इकट्ठा होने वाली सूखी, सड़ी-गली पत्तियों की मात्रा भी, जिससे अधिकाधिक

डेंड्रोकेलेमस बांस का झुरमुट। एक बांस का व्यास 6 से 10 इंच और लम्बाई 30 से 40 फीट तक होती है।